प्रगतिपथ और अंधविश्वास

सीमा सिंह*

विश्वास और अंधविश्वास के बीच जो पतली रेखा है असल में उसी का सब खेल है। कहा भी गया है मानो तो देव नहीं तो पत्थर। आखिर एक शिला को व्यक्ति कैसे ईश्वर की संज्ञा दे सकता है। यह वही जान सकता है जो इसे जी पाया हो। अक्सर रात के समय सुनसान सड़क पर व्यक्ति डर जाता है और कई बार यह भी देखा गया है कि हनुमान चलीसा पढ़ने मात्र से वह उस डर पर विजय प्राप्त कर लेता है। यह भोगा हुआ सत्य है जिसे कई लोगों ने महसूस किया है।

ऋग्वेद से लेकर महात्मा गांधी तक सभी ने इस शिक्षा को महत्वपूर्ण माना है। यही शिक्षा व्यक्ति को विश्वास और अंधविश्वास में फर्क करना बताती है। अशिक्षित व्यक्ति ही शिक्षा के अभाव में अंधविश्वास में पड़ता है। शिक्षा को समझे बिना अंधविश्वास को नहीं समझा जा सकता है।

ऋग्वेद के अनुसार- ''शिक्षा वह है जो मनुष्य को आत्मविश्वास और स्वार्थहीन बनाये।''

महात्मा गांधी के अनुसार- ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बालक तथा मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा से सर्वोत्तम तत्त्वों को प्राप्त करना है।''

काण्ट के अनुसार- 'शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विश्वास है, जिसकी उसमें दक्षता है।''

मानव जन्म के शुरूवाती काल में मनुष्य अपनी शक्तियों और क्रियाओं से अवगत नहीं था जिस कारणवश वह इसके पीछे एक अदृश्य शक्ति को मानता था। प्राकृतिक आपदाएं भूत और पिशाचों का प्रकोप मानी जाती थी। धीरे-धीरे व्यक्ति ने शिक्षा अर्जित की जिससे वह विज्ञान को समझ सका। मुगल काल में यह अंधविश्वास और तेज गति से पांव पसारने लगा। इसी युग में कबीरदास का जन्म हुआ। वह कहते हैं -

काजी तुम कौन कितेब बखानी।
झंखत बकत रहहु निशि बासर।
मति एकऊ नहीं दिल में खोजी देखि खोजा दे।
बिहिस्त कहां से आया?

काजी, मौलवी और पंडितों ने धर्म के आधार पर जनता को बरगलाया है। इस पर कबीरदास ने खूब खुलकर लिखा है। कबीरदास का जन्म ऐसे ही युग में हुआ था जब चारों ओर अंधविश्वास पसरा पड़ा था। हिन्दू मुस्लिम तमाम धर्मों के अंधविश्वास को उन्होंने उजागर किया। साथ ही यह भी कहा कि माला फेरने से ईश्वर प्राप्त नहीं होते हैं। इसके लिए राम के वास्तविक स्वरूप को पहचानना होगा।

अंधविश्वास एक अज्ञान और भय से मिलाजुला विश्वास है। इसे अंग्रेजी में सूपरस्टीसियस भी कहा जाता है। यह लैटिन भाषा का शब्द है। यह किसी देश, धर्म या संस्कृति से बंधा नहीं होता है। दुनिया के हर कोने में लोग इसका पालन करते देखे जाते हैं।

बिना उचित कारण के जब विश्वास, अंधविश्वास का रूप धारण कर ले वहीं अंधविश्वास है। कई अंधविश्वास व्यक्ति पीढ़ियों से ढोता है उस पर प्रश्न नहीं करता है। कई बार ऐसे अंधविश्वास से पीढ़ियां प्रभावित होती रहती हैं। छोटा बच्चा जब परिवार की रूढ़ियों को बचपन से पालन करता आ रहा हो तब ऐसी स्थिति में उसके मन पर यह गहरा प्रभाव छोड़ती हैं। शिक्षा के अभाव में बालक उसका प्रतिकार तक नहीं करता है। कारणस्वरूप जीवन भर वह अंधविश्वास से बाहर नहीं निकल पाता है।

* सी.वी.एस. महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय।

'विश्वास और अंधविश्वास' पुस्तक के लेखक डॉ. नरेंद्र दाभोलकर ने लिखा है- ''विश्वास क्या है? कब वह अंधविश्वास का रूप ले लेता है? हमारे संस्कार हमारे विचारों और विश्वासों पर क्या असर डालते हैं? समाज में प्रचलित धारणाएं कैसे धीरे-धीरे सामूहिक श्रद्धा और विश्वास का रूप ले लेती हैं। टेलीविजन जैसे आधुनिक आविष्कार के सामने मोबाइल साथ में लेकर बैठा व्यक्ति भी चमत्कारों, भविष्यवाणियों और भूत-प्रेतों से संबंधित कहानियों पर क्यों विश्वास करता है?'' इस पुस्तक में इन्हीं प्रश्नों के उत्तर देते हुए लेखक ने अंधविश्वास के विभिन्न घटकों पर चर्चा की है। किसी भी देश को प्रगति पथ पर चलते हुए प्रगतिशील होना आवश्यक है। दकियानूसी विचारों को दूर फेकना होगा।

कमजोर मनोविज्ञान और व्यक्तित्व के लोगों में यह अंधविश्वास अधिक नजर आता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में सफलता नहीं पाते हैं और धीरे-धीरे उनका यह अंधविश्वास और गहरा होने लगता है। इन्हें ऐसा लगता है मानों अंधविश्वास की सहायता से यह सफलता प्राप्त कर लेंगे।

आंख का फड़कना असल में मसल फ्लीकरिंग है जिसे लोग बुरे शगुन के रूप में देखते हैं। ऐसा नहीं है हमेशा यह होता है। कुछ समय में आंख का फड़कना स्वतः ही बंद भी हो जाता है। ऐसे ही यदि बिल्ली रास्ते से गुजर जाए या कोई घर से निकलते हुए छींक दे तो व्यक्ति कुछ देर रुक कर निकलता है। बिल्ली के रास्ता काटने पर बहुत से लोग वहीं खड़े हो जाते हैं और किसी और व्यक्ति का इंतजार करते हैं जो उसके आगे निकल जाए। इसी तरह के कुछ और अंधविश्वास में से एक है तेरह नंबर। देखा गया है कि यह नंबर इतना अशुभ माना जाता है कि होटल में इस नंबर का कमरा नहीं होता है। बारह के बाद सीधे चौदहवा नंबर होता है। अक्सर बैठे-बैठे व्यक्ति कहता है उसके दाएं हाथ की हथेली में खुजली हो रही है तो धन का आगमन है और बाएं हाथ की खुजली धन के जाने का सूचक घोषित हो जाता है। अंधविश्वास यह मानता है कि काली बिल्ली में भूत का वास है इसी कारण लोग इन्हें घर में नहीं घुसने देते हैं। क्या बिल्ली का रंग या इंसान का रंग किसी के बस की बात है। रंग तो प्रकृति की देन है। अंधविश्वास की यह परिकल्पनाएं बहुत घातक साबित होती हैं। सत्य न होने पर भी व्यक्ति कई बार बेगुनाहों के साथ गलत कर देता है।

अंधविश्वास की भयावकता के चलते ही भारत में इससे संबंधित कई कानून बने हैं। जादू टोने पर केंद्रीय स्तर के कई कानून हैं। राज्य स्तर पर कार्य करती है।

भारत मे अंधविश्वास पर कानून

- वर्ष 2016 में लोकसभा में डायन शिकार निवारण विधेयक लाया गया लेकिन यह पारित नहीं हो सका।
- मसौदा प्रावधानों में किसी महिला पर डायन का आरोप लगाने या महिला के खिलाफ आपराधिक बल का उपयोग करने या जादू-टोना करने के बहाने यातना देने या अपमान करने के लिए दंड का प्रावधान किया गया है।
- आईपीसी की धारा 302 के तहत मानव बलि को शामिल किया गया है। इसी तरह धारा 295ए ऐसी प्रथाओं को हतोत्साहित करती है।
- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 51ए (एच) भारतीय नागरिकों के लिए वैज्ञानिक सोच, मानवतावाद और सुधार की भावना को विकसित करना एक मौलिक कर्तव्य बनाता है।
- ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज एक्ट, 1954 के तहत अन्य प्रावधानों का भी उद्देश्य भारत में प्रचलित विभिन्न अंधविश्वासी गतिविधियों में कमी लाना है।

मनुष्यता ही सबसे सर्वोपरि धर्म है। किसी की सहायता करना, उसके दुःख दर्द बांटने वाला व्यक्ति ही धार्मिक हो सकता है। बाकि किसी की व्यक्तिगत आस्था पूजा की अलग-अलग पद्धति हो सकती है। बुरे मार्ग से भटकाव के लिए ईश्वर का डर दिखाकर अधर्म के रास्ते से रोकता है। यदि व्यक्ति स्वतः ही यह समझ जाए तो धर्म की आड़ की आवश्यकता भी न पड़े। व्यक्ति अपनी अच्छाई, परोपकार और प्रेमभाव को बचाए रखे यही उसके मनुष्यता के धर्म में भी निहित है। पूजा, अर्चना, नमाज, इत्यादि व्यक्ति को शांत रखने की प्रक्रिया है। सबको साथ लेकर चले, सबका कल्याण हो यही तो हमारे देश की नींव में निहित है। वसुधैव कुटुम्बकम् यही कहता है।

****